'गोदान' उपन्यास में सामाजिक सरोकार

'Godan' Upanyas Me Samajik Sarokar

***Dr.Manjushree Menon, Associate Professor of Hindi, M.E.S.College of Arts, Commerce and Science, Bangaluru.**

भूमिका:-

हम साहित्य को मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें चित्रण की स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाई का प्रकाश हो, जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे सुलावे नहीं।" - प्रेमचन्द प्रेमचन्द प्रेमचन्दजी की दृष्टि बहुत साफ थी। प्रगतिशीलता उनकी रग-रग में समायी थी। धन को उन्होंने बहुत महत्त्व नहीं दिया। साहित्य सेवा में ही स्वयं को आजीवन लगाये रहे और भारतीय समाज को एक-से-एक कालजयी कृतियाँ प्रदान कर सके। इन कृतियों का सृजन सोद्देश्य किया गया है।

गोदान प्रेमचंद की सर्वाधिक लोकप्रिय व कालजयी उपन्यास है इस उपन्यास को कृषकों का महाकाव्य भी कहा गया है। सभी आलोचकों ने प्रेमचंद को कृषक और सामाजिक जीवन का कथाकार कहा है। उसके सभी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन तथा ग्रामवासियों विशेषतः किसानों शोषित वर्गों की समस्याओं पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया गया है उनकी समस्या का मूल कारण ढूंढने का प्रयत्न किया है।इस कारण प्रेमचंद को ग्रामीण जीवन तथा कृषि – संस्कृति का कथाकार कहा गया है। प्रेमचंद के सभी उपन्यास सामाजिक है , और उनकी सामाजिकता किसी न किसी समस्या पर ही आधारित है , प्रेमचंद का कोई भी उपन्यास ऐसा नहीं है जिसमें किसी समस्या को न उठाया गया हो। वस्तुतः वह समस्यामूलक उपन्यासकार ही थे। सुषुप्तावस्था में पड़े भारतीय जनमानस में नवीन चेतना का संचार तथा सामाजिक विषमता एवं विरूपता को दूर करने का यत्न ही उपन्यासकार एवं कहानीकार प्रेमचन्दजी का मुख्य उद्देश्य था। आलोच्य कृति गोदान उनका सर्वाधिक प्रौढ़ उपन्यास है।आलोचकों की दृष्टि भी इसी कृति पर सर्वाधिक बार टिकी है।उनके द्वारा इसमें उठायी गयी समस्याओं का अनुसंधान तथा प्रस्तुत महाकाव्यात्मक औपन्यासिक कृति के सृजन के उद्देश्यों पर प्रकाश भी डाला गया है। प्रेमचन्द जी के उपन्यास गोदान के उद्देश्य निम्न है -

भारतीय कृषक के विसंगतिपूर्ण जीवन की अभिव्यंजना

गोदान में दो कथाएँ हैं- पहली, ग्रामीण जीवन की कथा तथा दूसरी शहरी, जीवन की कथा। इन दोनों कथाओं के अलग-अलग पात्र हैं। पूरे उपन्यास में एकमात्र पात्र रायसाहब ग्रामीण और शहरी कथा के बीच की कड़ी का काम करते हैं। वस्तुत: ग्रामीण जीवन में जी रहे पात्रों की दशा बहुत ही दयनीय है। ग्रामीण परिवेश की धुरी में मूलतः किसान ही है, जिसका शोषण सेठ-साहूकार और जमींदार करते हैं और परिणामतः वह मजदूर बनने को विवश है। कृषकों की दयनीय दशा का मूल कारण उनकी अज्ञानता ही है। उनकी रूढ़िवादिता, भाग्यवादिता तथा अज्ञानता उन्हें प्रगति पथ पर चलने से रोकती है। गोबर को समझाता हुआ होरी कहता है कि "छोटे-बड़े भगवान् के घर से बन कर आते हैं। सम्पत्ति बड़ी तपस्या से मिलती है। उन्होंने पूर्वजन्म में जैसे कर्म किये हैं उनका आनन्द भोग रहे हैं।

हमने कुछ नहीं संचा तो भोगें क्या?" अज्ञानता में जी रहे भारतीय कृषक की यह सोच है। लेकिन होरी के उक्त कथन का खण्डन प्रेमचन्दजी उसी के पुत्र गोबर से करवाते हैं और इस प्रकार तत्कालीन कृषकों के सामने गोबर जैसे प्रगतिशील युवक का चरित्र प्रस्तुत करते हैं।

गोदान में कृषक जीवन की त्रासदी को दर्शाया गया है। यह त्रासदी उसकी व्यक्तिगत खामियों के कारण है। वह अपने दूसरे किसान भाई को देखकर ईर्ष्या करता है, रूढियों में जकडा हुआ है। भोला स्पष्टतः कहता है कि- "कौन कहता है कि हम तुम आदमी हैं। हममें आदमियत कहाँ। आदमी वह है जिसके पास धन है, अख्तियार है, इल्म है। हम लोग तो बैल हैं और खेत में जुतने के लिए पैदा हुए हैं। उस पर एक दूसरे को देख नहीं सकते। एका का नाम नहीं। एक किसान दूसरे के खेत पर न चढ़े तो कोई जाफा कैसे करे, प्रेम तो संसार से उठ गया।"

सामाजिक शोषकों का यथार्थ चित्रण

'गोदान' उपन्यास की कथावस्तु शोषणकारी शक्तियों की स्थिति को अपने में समेटे है। प्रेमचन्दजी इस स्थिति का मार्मिक चित्रण यथार्थ के धरातल पर करते हैं। शोषणकारी शक्तियों के विविध रूप हैं। वस्तुत: इनका एक जाल है, जिसमें उलझकर किसान अपने को असहाय महसूस करने लगता है। जहाँ एक तरफ छोटे स्तर पर महाजन, साहूकार, पटवारी, कारिन्दा, कारकुन तथा अन्य छोटे कर्मचारी किसानों का शोषण करते हैं, वहीं दूसरी तरफ समाज के तथाकथित गणमान्य लोग जैसे- पुरोहित, जमींदार, थानेदार तथा गाँव के मुखिया भी इन किसानों का दोनों हाथों से गला दबाने में नहीं चूकते। तत्कालीन किसान की दयनीय दशा का चित्रांकन होरी के निम्न कथन से हो जाता है। कथन द्रष्टव्य है "उसी की चिंता तो मारे डालती है, दादा। अनाज तो सब-का-सब खलिहान में ही तुल गया। जमीदार ने अपना लिया, महाजन ने अपना लिया। मेरे लिए पाँच सेर अनाज बच रहा।जमींदार तो एक है, पर महाजन तीन-तीन हैं। जमींदार के भी आधे रुपये बाकी पड़ गये। हमारा जनम इसीलिए हुआ है कि अपना रक्त बहाएँ और बड़ों का घर भरें। मूल का दुगना सूद भर चुका, पर मूल ज्यों-का-त्यों सिर पर सवार है।"

समाजवादी व्यवस्था की स्थापना पर बल

प्रेमचन्दजी प्रगतिवादी विचारधारा से ओत-प्रोत थे। समाज में निरन्तर विसंगति का बोल-बाला बढ़ता जा रहा था। अर्थात् अमीर और गरीब के बीच की खाई बढ़ती जा रही थी। अमीर अधिक अमीर तथा गरीब अधिक गरीब होता जा रहा था। उपन्यासकार ने इस स्थिति को देखकर ही अपनी कृति में खन्ना जैसे पूँजीपति का चरित्र गढ़ा, जो मजदूरों का शोषण करके अपनी धन-सम्पदा में निरन्तर बढ़ोत्तरी कर रहा था। प्रेमचन्द जी ने इस प्रतिनिधि पूँजीपति को गर्त में मिलते हुए और मजदूर वर्ग को सचेत होते हुए . , प्रदर्शित किया है। खन्ना की पत्नी गोविन्दी सात्विक विचारधारा की महिला है, वह मिल (फैक्ट्री) के जल जाने पर खन्ना को समझाती है कि- "जीवन का सुख दूसरों को सुखी करने में है, उन्हें लूटने में नहीं। मेरे विचार से तो पीड़क होने से पीड़ित होना कहीं श्रेष्ठ है। धन खोकर अगर हम अपनी आत्मा को पा सके तो यह कोई महँगा सौदा नहीं है।"

क्रान्तिधर्मी नारी-चरित्रों की सृष्टि

प्रेमचन्द की प्रगतिशीलता बहुआयामी थी। वे नारी को परदे की वस्तु नहीं बनाना चाहते थे। उनका लक्ष्य था- तत्कालीन परिप्रेक्ष्य में नारी की भूमिका की तलाश करना। आलोच्य उपन्यास में उनकी तलाश पूरी भी हुई है। उन्होंने धनिया, मिस मालती, गोविन्दी, झुनिया, चुहिया, सिलिया, सोना तथा रूपा आदि चरित्रों के माध्यम से अपनी प्रगतिशील विचारधारा अपने पाठकों तक संप्रेषित की है। प्रेमचन्द अपने पाठकों से मिस मालती का परिचय इस प्रकार कराते हैं, "दूसरी महिला जो ऊँची एड़ी का जूता पहने हुए है और जिनकी मुख छवि पर हँसी फूटी पड़ती है, मिस मालती हैं। आप इंग्लैण्ड से डाक्टरी पढ़ कर आयी हैं और अब प्रैक्टिस करती हैं। ताल्लुकेदारों के महलों में उनका प्रवेश है। आप नवयुग की साक्षात् प्रतिमा हैं। गात कोमल पर चपलता कूट-कूट कर भरी हई है। झिझक या संकोच का कहीं नाम भी नहीं। मेक-अप में प्रवीण, बला की हाजिर जवाब, पुरुष मनोविज्ञान की अच्छी जानकार, आमोद-प्रमोद को जीवन का तत्त्व मानने वाली, लुभाने और रिझाने की कला में निपुण । जहाँ आत्मा का स्थान है वहाँ प्रदर्शन जहाँ हृदय का स्थान है, वहाँ हाव-भाव, मनोद्गारों पर कठोर निग्रह, जिसमें इच्छा या अभिलाषा का लोप-सा हो गया हो।" .

परिवारिक विघटन की समस्या –

परिवार के विघटन की समस्या आदि काल से चली आ रही है यही समस्या को गोदान में प्रेमचंद जी ने उठाया है। जीवन मूल्यों में परिवर्तन तथा आर्थिक दबाव के कारण सम्मिलित परिवार टूटने लगे थे। प्रेमचंद ने स्वयं अपने परिवार मैं सास बहू के झगड़े थे। उनकी सौतेली मां कि कभी उनकी पत्नी से नहीं बनी थी माता के पुत्रों अपने सौतेले भाइयों के लिए सब कुछ करने के बाद भी उन्हें बदले में मिले केवल उपेक्षा अनादर ही मिला। उपन्या में पहले उन्होंने होरी तथा उनके दो भाइयों हीरा तथा शोभा को उनसे अलग अलग होते दिखाया है। तथा उसके बाद में पिता-पुत्र होरी तथा गोबर के बीच विचार विमर्श से के कारण जो दरार पड़ती है। वह बढ़ती जाती है और गोबर अपनी पत्नी झुनिया के साथ गांव छोड़कर शहर चला जाता है ,वहां मजदूरी करता है और अपनी बहन की शादी के अवसर पर भी गांव नहीं लौटता। नगर में राय साहब तथा उनके बेटे रूद्र पाल में मतभेद है। सरोज को लेकर बाप-बेटे के संबंधों में दरार पड़ गई है। बेटी मीनाक्षी पिता के लाख समझाने पर भी अपने वेश्यागामी माय शराबी पति से समझौता करने को तैयार नहीं होती। उधर खन्ना तथा उसकी पत्नी गोविंदी के साथ भी संबंकुच ाचा नहीं है। इन चित्रों के द्वारा लेखक ने सम्मिलित परिवारों के टूटने बिखरने तथा दांपत्य जीवन में कटुता आने की समस्या की ओर संकेत किया है।

विवाह संबंधी –

विवाह की समस्याएं गोदान की एक मुख्य समस्या है जिसका चित्रण गोदान में हुआ है। दहेज के कारण विवाह होने में बाधा , बाल विवाह तथा विधवा की समस्या अनमेल विवाह या वृद्ध विवाह का उदहारण इस उपन्यास में देखा जा सकता है। होरी की बेटी सोना के विवाह में दहेज की समस्या के कारण बढ़ा बनता है। परंतु मथुरा का सोना के प्रति प्रबल आकर्षण सोना का साहस और स्पष्ट ऐलान की दहेज की मांग पर अड़े रहने के कारण वह विवाह नहीं करेगी। इस बाधा को समाप्त कर देता है छोटी बेटी रूपा का विवाह भी दहेज न दे सकने के कारण अधेड़ उम्र

के रामसेवक से करना पड़ता है , जो रूपा के पिता की उम्र का है।झुनिया बाल विधवा है अतः उसे सारी उम्र अकेले अपनी इच्छाओं का दमन करते हुए यही काटनी है। गोबर द्वारा अपनाए जाने पर भी भी पंचायत और गांव के लोग विरोध करते हैं स्पष्ट है कि विधवा को समाज की रुचियों तथा अनीति के कारण अपना जीवन शारीरिक तथा मानसिक कष्टों के बीच बिताना पड़ता है।

दिखावा / प्रदर्शनीयता की समस्या-

प्रदर्शन प्रियता की समस्या या थोथी मर्यादा की समस्या गांव में ही नहीं शहर में भी यही समस्या है। गांव में होरी अपनी प्रतिष्ठा के लिए ही द्वार पर गाय पालना चाहता है। लोग ुको महतो कहेंगे यही चाह में गाय खरीदता है जिसके लिए वह कितने यत्न करता है। भाई जहर देकर गाय को मर देता है। महत्व कहलाने के लालच में गोबर के लाख समझाने पर भी खेती छोड़कर मजदूरी करने को तैयार नहीं होता। धनिया , मथुरा के घरवालों के मना करने पर भी दहेज में अपने सामर्थ्य के बाहर सम्मान देती है और परिवार कर्ज में डूब जाता है।पंच गोबर – झुनिया के विवाह में जो दंड देता है उससे होरी और टूट जाता है। जाति से बहिष्कृत ना हो इसलिए होरी डाँड़ भरता है , जिसके कारण वह कर्ज में डूब जाता है और अंत में उसके पास ना गाय होती है ना बैल और ना खेती करने के लिए खेत। शहर में भी यही हाल है राय साहब अपनी मिथ्या शाख बनाए रखने के लिए कभी इलेक्शन लड़ते हैं तथा कभी पुत्रियों के विवाह के लिए ऋण लेते हैं , और दिन प्रतिदिन कर्ज में डूब कर अपना सुख चैन मानसिक शांति गवा बैठते है।

निष्कर्ष

प्रेमचन्द जी गाँधी जी के रामराज्य जैसे समाज की स्थापना करना चाहते थे।एक ऐसे समाज की परिकल्पना उन्होंने की थी, जो अन्याय, अत्याचार, शोषण तथा सामाजिक विरूपताओं से रहित हो। लोगों में परस्पर सद्भाव हो। वैसे भी भारतीय दृष्टि बहुत व्यापक है। वह वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का उद्घोष करती है। इसी तरह के समाज की परिकल्पना करती हई मालती कहती है कि- "ससार म अन्याय का, आतंक की, भय की दुहाई मची हुई है। अन्धविश्वास और स्वार्थ का प्रकोप छाया हुआ है। हम इन सबको समाप्त करने की ओर अग्रसर रहें।" निष्कर्षतः कह सकते हैं कि गोदान एक उद्देश्यपरक रचना है।इसमें समस्याओं का उद्घाटन करके लेखक ने उनका निराकरण भी किया है।

संदर्भ ग्रंथ:-

- प्रेमचन्द : जीवन परिचय (हिन्दी) (एच. टी. एम. एल)। अभिगमन तिथि: 9 नवंबर, 2010
- अध्याय 16, पृ. 574, हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ॰ नगेन्द्र, 33 वां संस्करण - 2007, मयूर पेपरबैक्स, नौएडा
- प्रो. डी. पी. चन्द्रवंशी, "हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द्र का योगदान", रिसर्च जर्नल ऑफ़ हुमानिटीज़ एंड सोशल साइंसेज, 2015
- "प्रेमचंद की हिंदी कहानी, हिंदी कहानी के सम्राट मुँशी प्रेमचंद की कहानी, मुंशी प्रेमचंद, *हिंदी साहित्य सबके लिए*. अभिगमन तिथि 19 दिसम्बर 2017.